❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण।। ऋग्वेद 1/57/5
हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।
O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 39, अंक 25 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 अप्रैल, 2016 से रविवार 1 मई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सिंहस्थ महाकुम्भ – उज्जैन प्रारम्भ: एक मास तक चलेगा महाकुम्भ

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में महाकुम्भ में आर्यसमाज द्वारा वैदिक धर्म प्रचार

महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में उद्घाटन समारोह सम्पन्न : हजारों की संख्या में पहुंचे आर्यजन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया शुभारम्भ

सिंहस्थ कुम्भ उज्जैन में वैदिक धर्म प्रचार शिविर का दीप प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन करते सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, महाशय धर्मपाल जी, श्री इन्द्रप्रकाश गांधी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, आचार्या अन्नपूर्णा जी एवं इस अवसर पर उपस्थित स्वामी ऋतस्पति जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं श्री राजेन्द्र जी

दिनांक 21 अप्रैल 2016, सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में एवं मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन द्वारा वैदिक धर्म के सिद्धातों के प्रचार-प्रसार, अंधविश्वास एवं पाखण्ड-खण्डनार्थ विशाल शिविर का शुभारम्भ सार्वदशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने दीप प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच. चेययरमैन) ने की। उज्जैन में शिप्रा तट पर आयोजित सिंहस्थ कुंभ मेले के अवसर पर वेद प्रचार एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का विराट् एवं भव्य

वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल : वेदादि वैदिक साहित्य उपलब्ध

सत्य सनातन वैदिक धर्म का एक झण्डा-एक ग्रन्थ-एक ईश्वर की मान्यता स्थापित होने तक आर्यसमाज को लगाने होंगे प्रचार शिविर – विनय आर्य

आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रान्तों की आर्य समाजों के पदाधिकारीगण एवं आर्यजनों के विशाल जन समूह को देखते ही बनता था। इतना बड़ा आर्य जनसमूह अभी तक के कुंभ मेलों के इतिहास में पहली बार देखने को मिला।

50 हजार सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- में पहुंचाने का लक्ष्य आर्यजन प्रचार कार्य में सहयोगी बनें

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य ने कहा 'सिंहस्थ मेला विश्व के विशालतम आयोजनों में से एक है जहां लाखों श्रद्धालु ज्ञानार्जन, आनन्दोपलब्धि हेतु शिप्रा नदी के तट पर एकत्र होते हैं।' उपमंत्री श्री विनय आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'वैदिक

विचार टीवी के माध्यम से अनेक फिल्मों का प्रचारार्थ प्रसारण

धर्म प्रचार समिति और दि. आर्य प्रतिनिधि सभा इस महान अवसर पर ईश्वरी ज्ञान, सत्य सनातन वैदिक धर्म का संदेश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास कर रही है।' उन्होंने आगे कहा कि जब तक सत्य सनातन वैदिक धर्म का एक झण्डा-एक ग्रन्थ-एक ईश्वर की मान्यता स्थापित नहीं होती तब तक आर्यसमाज को प्रचार शिविर लगाने होंगे।

महाशय धर्मपाल जी ने मेले को सफल बनाने के लिए सभी आर्य पदाधिकारियों एवं मेले में पहुंचे आर्यजनों का धन्यवाद करते हुए कहा कि 'महर्षि दयानन्द जी के सिद्धातों के प्रचार-प्रसार के लिए इस प्रकार के महामेलों में आर्य समाज की सक्रिय भूमिका आवश्यक है।' दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों से पधारे पदाधिकारियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये व तन-मन-धन से सिंहस्थ कुंभ में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज करा रहे हैं।

प्रचार सहयोग हेतु अपनी दानराशि **'सिंहस्थ मेला वैदिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा आर्यसमाज मन्दिर, आर्यसमाज मार्ग उज्जैन (म.प्र.) के पते पर भेज सकते हैं अथवा सीधे बैंक में जमा करा सकते हैं।
भारतीय स्टेट बैंक, उज्जैन A/c No. 35072661286 IFSC : SBIN000492
कृपया अपनी राशि जमा कराने के उपरान्त जमा पर्ची पर अपना नाम-पता, फोन नं. लिखकर **aryasamajunjnkumbh2016@gmail.com** पर ईमेल करें।

आर्यसमाज के कर्म योद्धा, हीरो साइकिल के अध्यक्ष, समाजसेवी, सेवाव्रती, 99 वर्षीय

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी का देहावसान

वृहद आर्य समाज परिवार के वरिष्ठ सदस्य, दानवीर, वैदिक परम्परा को पैतृक रूप से प्राप्त करने वाले एवं अपने व्यवसाय के माध्यम से विश्व में एक अनूठी पहचान बनाने वाले हीरो साइकिल के चेयरमैन एवं अन्य अनेक संस्थानों के संस्थापक, अनेक कुरुकुलों के कुलपिता महात्मा सत्यानन्द जी मुंजाल जी का दिनांक 14 अप्रैल, 2016 को 99 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

– शेष पृष्ठ 4 पर

वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी जीवनानन्द जी का निधन

आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक (पूर्व नाम श्री विवेक भूषण जी) के पूज्यपिता श्री स्वामी जीवनानन्द सरस्वती जी का दिनांक 21 अप्रैल, 2016 अकस्मात् देहावसान हो गया। उनकी इच्छानुसार उनका पार्थिव शरीर मेडिकल कॉलेज को दान कर दिया गया। पूज्य स्वामी जी की स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनाक 24 अप्रैल, को आर्यसमाज आदर्श नगर में सम्पन्न हुई, जिसमें उनके परिजनों के साथ साथ सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान एवं मन्त्री श्री अरुण प्रकाश वर्मा सहित अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

– शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

बड़े से बड़े भय को दूर करने वाला

इन्द्रो अङ्ग महद् भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः।। ऋ. 2/41/10
ऋषिः गृत्समदः।। **देवताः** इन्द्रः।। **छन्दः** गायत्री।।

शब्दार्थ- **अङ्ग**= हे प्यारे! **इन्द्रः**=इन्द्र परमेश्वर तो **अभीषत्**=सामने आये हुए **महद् भयम्**=बड़े भय को भी **अप चुच्यवत्**=विनष्ट कर देता है। **सः हि**=वह ही निश्चय पूर्वक **स्थिरः**=स्थिर है, अचल है, शाश्वत है और **विचर्षणिः**=सब जगत् को ठीक-ठीक देखने वाला है।

विनय - हे प्यारे! तू क्यों घबराता है? तेरे सामने जो भय उपस्थित है उससे बहुत बड़े भय और बहुत भारी विपत्तियां मनुष्य पर आ सकती हैं और आती हैं, परन्तु हमारे परमेश्वर उन सबको क्षण में टाल सकते हैं और टाल देते हैं। उसके सामने, उसके मुकाबले मं आये हुए महान्-से-महान भय पलभर भी नहीं ठहर सकते। हे प्यारे! तू देख कि इस संसार में एक वह इन्द्र ही स्थिर वस्तु है। वहीं सत्य है, सनातन, अटल, अच्युत है, कभी नष्ट न होने वाला है। शेष सब-कुछ-सभी कुछ क्षणभंगुर है, विनश्वर है, अशाश्वत है और चला जाने वाला है। यही एक महासत्य है जिसे सिखाने के लिए संसार में चौबीसों घण्टों की घटनाएं हो रही हैं। हे मनुष्य! तू इस महासत्य पर विश्वास कर और निर्भय हो जा। वास्तव में संसार के सब दुःख, क्लेश, भय, संकट टल जाने वाले हैं, नश्वर हैं, क्योंकि ये नश्वर वस्तुओं द्वारा और अज्ञान द्वारा बने हैं। संसार में जो अनश्वर है, अटल है वह तो परमेश्वर ही है। इस समय चाहे तुझे सर्वत्र भय-ही-भय दृष्टिगोचर होता हो, परन्तु उस अटल इन्द्र की शरण पकड़ने पर यह सब ऐसे जाता रहेगा जैसेकि सदा रहने वाले अटल इन्द्र=सूर्य के सामने से नष्ट हो जाने वाले बादलों का भारी-से भारी समूह जाता रहता है, छिन्न-भिन्न हो जाता है, वह सदा सूर्य को घेरे नहीं रह सकता, अतः हे प्यारे! तू अब उस परमेश्वर की ही शरण पकड़ जो स्थिर है और 'विचर्षणि' है- जो सदा रहने वाला है और इस सब जगत् को ठीक-ठीक देखने वाला सर्वज्ञ है। यह समझते ही तेरे सब भय मिट जाएंगे। इन्द्र को स्थिर और विचर्षणि जान लेना ही उसकी शरण में आ जाना है। जिसने सचमुच उसे एकमात्र नित्य और सर्वज्ञ वस्तु करके देख लिया है वह उसे छोड़कर और कहां अपना आश्रय टिका सकता है। और जिसने उसके इस रूप को देख लिया उसके सामने कौन-सा भय ठहर सकता है? इसलिए प्यारे! तू घबरा मत, तू उसकी शरण पकड़। यह सामने आये हुए इस छोटे-से भय को ही नहीं मिटा देगा, अपितु एक दिन आएगा जबकि यह जगदीश्वर तुझसे संसार के सबसे भारी भय को, संसार- बन्ध के महान् भय को, बार-बार जीने- मरने के महाभय को भी छुड़ाकर तुझे सदा के लिए अजर, अमर और अभय कर देगा। - ***आचार्य अभयदेव जी***

साभार : वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

क्या हिन्दू या सिख होकर जन्म लेना पाप है?

अपना घर छोड़ना आसान नहीं होता साहब, हम वहां जिल्लत की जिंदगी जी रहे थे, हमारे बच्चे स्कूल नहीं जा सकते थे। हमेशा खौफ का साया घेरे रहता था। औरतें घरों में कैद होकर रह जाती थी, ऐसे माहौल में अब ज्यादा दिन रहना मुश्किल था, लिहाजा मौका मिलते ही भारत चले आए। यह कहते-कहते पाकिस्तान से आये हिन्दू रोने लगे थे। लेकिन भारत के अन्दर किसी भी तथाकथित मानवाधिकारों के रक्षक, वोट बैंक की खातिर आतंकी अफजल को गुरु जी कहने वाले लोगों का दिल नही पसीजा था। अभी कई रोज पहले पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वाह प्रांत में आतंकियों ने प्रांतीय विधानसभा सदस्य सरदार सूरन सिंह की हत्या कर दी। जिसकी वजह इतनी थी कि उसने उस इलाके में 75 साल से बंद पड़े गुरुद्वारे को खुलवाया था। हम अखलाक या इशरत जहाँ, की तुलना इस हत्या से करके समय बेकार करना नहीं चाहते। बस उन लोगों से सीधा सा प्रश्न करना चाहते है जो बाटला हाउस मुठभेड़ में शहीद हुए दिल्ली पुलिस निरीक्षक मोहन चंद शर्मा के शव पर आँखें नम करने के बजाय इंडियन मुजाहिदीन के आतंकियों की लाश पर आंसू बहा रहे थे, कि क्या पाकिस्तान में हिन्दू या सिख होकर जन्म लेना पाप है? उस मीडिया से भी प्रश्न है जो ब्रिटेन दौर पर भारत के प्रधानमंत्री से असहिष्णुता पर प्रश्न करती दिखाई देती है। किन्तु पाकिस्तान में लगातार अल्पसंख्यकों पर हो रहे हमले पर नवाज शरीफ से कोई सवाल पूछने से आज पीछे क्यों हट रहे हैं?

पिछले दिनों लाहौर के पब्लिक पार्क में ईस्टर त्योहार मना रहे ईसाई समुदाय के करीब 72 लोगों को एक आतंकी संगठन का शिकार होना पड़ा था। जिसमें करीब 300 लोग घायल हुए थे। विडम्बना देखिये हिसार के अन्दर एक चर्च की दीवार से कुछ पत्थर गिरने की आवाज तो अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सुनाई दे गयी थी, किन्तु इन मासूमों की चीख भारत से लेकर अमेरिका तक शायद नहीं पहुंची? पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा वैसे तो आम बात है लेकिन हिन्दुओं के साथ जो व्यवहार दूसरे देशों में हो रहा है वो वास्तव में दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन यदि बात अपने पड़ोसी मुल्कों की करें तो पकिस्तान हो या बांग्लादेश, हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों में कोई कमी नहीं आ रही है। अपनी आवाज मुखर करने की कीमत अल्पसंख्यक हिन्दू समुदायों को जान, माल और इज्जत गवां कर चुकानी पड़ रही है। पिछले दिनों खुद बांग्लादेश का मीडिया इस बात को कह रहा था कि जिस तरह से कुछ इलाकों में अल्पसंख्यकों के साथ व्यवहार हो रहा है उन पर अत्याचार हो रहे है उनसे 1971 में पाकिस्तान समर्थक समूहो द्वारा दिखाई गयी बर्बरता की यादे ताजा हो गयी है। उत्तरी बांग्लादेश के कुछ इलाके और दक्षिणी हिस्से के कई गांवों में जब इस तरह की वारदातें हुई तब करीब सौ से भी ज्यादा हिन्दू परिवार अपना घर-बार छोड़ कर भाग गए। हिन्दू धार्मिक स्थलों पर तोड़फोड़ किया जाना, महिलाओं के साथ जबरन विवाह और अपहरण, अंत्येष्टि स्थलों पर कब्जे की घटनायें लगातार जारी हैं।

कुछ महीने पहले पाकिस्तान से आये गजल गायक गुलाम अली का शिव सेना की धमकी के बाद मुम्बई में शो रद्द हुआ था, उस समय मीडिया से लेकर तमाम धर्मनिरपेक्ष दल दुःखी नजर आये और अपने-अपने राज्यों में गुलाम अली का कार्यक्रम कराने को लालायित भी हुए थे किन्तु इन मुद्दों पर आज तक एक भी तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता ने पाकिस्तान सरकार को चिट्ठी लिखकर यह कहने का साहस नहीं किया कि पाकिस्तान में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार बंद करें। 2012 में हिन्दुओं का एक जत्था जब भारत आया था जो इतना डरा हुआ था कि वापस जाने को तैयार नही था। कानाराम भील पहले पाकिस्तान के पंजाब सूबे में रहीमयार खान जिले में रहते थे, अब वो सदा के लिए अपने घर-वतन को छोड़ आए थे। खिम्मी भील ने पाकिस्तान से आते समय वचन दिया था कि वो तीर्थ यात्रा पूरी कर के वापस लौटेगी लेकिन अब वह भारत में ही रहेगी। इन हिंदुओं के मुताबिक, इनसे यह करार लिया गया था कि वो भारत में नहीं रुकेंगे और अपनी धार्मिक यात्रा पूरी होते ही, वीजा में दी गई मियाद के भीतर ही पाकिस्तान लौट आएँगें। लेकिन इनमें से हर हिंदू का कहना था कि चाहे जेल भेज दो लेकिन पाकिस्तान के लिए रेल में मत भेजो। बांग्लादेश हो या पाकिस्तान या कोई और देश, नागरिकों की हैसियत से अल्पसंख्यकों के घरों और परिवारों की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी किसकी है?

कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत के सिविल सोसायटी के संगठन, मानवाधिकार पर शोर मचाने वाली शबाना आजमी, याकूब मेनन की फांसी के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाने वाले लोग, अखलाक के परिजनों पर लाखों रुपये बरसाने वाले तमाम नेता, इस महत्वपूर्ण और संवेदनशील सवाल पर चुप्पी साध जाते हैं। क्या आज वोट मानवता से बड़ी हो गयी? क्या इनकी नजर में एक इन्सान के रूप में दर्द सिर्फ मुसलमान को ही होता है? पाकिस्तान में बलात्कार का शिकार हो रही हिन्दू सिख महिलाएं, इस निंदा के झूठे आरोपों में जेलों में सड़ रहे लोगों का दर्द आखिर इनसे दूर क्यों भाग जाता है? क्यों यह लोग इन संवेदनाशील मुद्दों पर मूक हो जाते हैं? यह लोग अपना मत अपना उद्देश्य स्पष्ट करने से हिचकते क्यों है? बहरहाल इन सब प्रश्नों पर हमारा अंत में एक ही अहम प्रश्न है, कि सोचो जब हम सब चुप रहेंगे तो उन लोगों की आवाज कौन बनेगा? -***सम्पादक***

बोध कथा

मन को वश में रखो!

बहुत वर्षो की बात है। मैं तब छोटा था, परन्तु मैं नहीं, यह शरीर छोटा था। मैं तो सदा एक-सा रहता हूं। यह शरीर ही घटता-बढ़ता रहता है।

मैं था अपने गांव 'जलालपुर जट्टां' में। इसके निकट ही महन्तों का एक बाग था। मैं गांव से इस बाग की ओर जा रहा था। मार्ग में एक बहुत बड़ा जोहड़ आता था, जिसे मुसद्दीवाना कहते थे। यह जोहड़ अभी कुछ दूरी पर था कि पीछे से शोर सुनाई दिया। मैंने मुड़कर देखा-गांव के एक मुसलमान चौधरी घोड़े पर चिपके बैठे थे और घोड़ा सरपट दौड़ा आता था। कुछ लोगों ने घोड़ा रोकने का प्रयत्न भी किया, पर वह रुका नहीं। चौधरी जी को मैं जानता था। ऊंची आवाज़ में पूछा- ''चौधरी जी! इतनी तेज़ी से कहां जा रहे हो?''

चौधरी जी घोड़े से चिपटे-चिपटे बोले- ''इस घोड़े को पता है, मुझे नहीं। मुझे तो गुजरात जाना है।''

मैंने आश्चर्य से सोचा कि गुजरात तो हमारे गांव के दक्षिण में है। चौधरी जी उत्तर की ओर क्यों भागे जाते हैं? तभी घोड़ पहुंचा मुसद्दीवाना के पास। शायद सामने से कोई वस्तु दिखाई दी थी उसे। वह ज़ोर से उछला। मैं भी चौधरी साहब के पास मुसद्दीवाना में जल्दी से भागकर पहुंचा। चौधरी जी पर्याप्त संघर्ष के पश्चात् रकाब से अपना पांव छुड़ाने में सफल हो गये थे। जोहड़ के कीचड़ में लथपथ थे। उनकी पगड़ी परे तैर रही थी। घोड़ा दूसरी ओर जा रहा था और चौधरी जी कीचड़ में रंगे-रंगाये बाहर आने का प्रयत्न कर रहे थे। तब पता लगा कि वे गुजरात की ज़िला-कचहरी में उपस्थित होने के लिए घर से निकले थे। गुजरात की कचहरी में पहुंचने की बजाय उस जोहड़ में पहुंच गये, क्योंकि घोड़ा वश में नहीं रहा।

यही दशा होती है घोड़े के वश में न रहने से! सुनो, सुनो, सुनो! इस घोड़े (मन) को वश में रखो, नहीं तो भगवान् की कचहरी में पहुंचने के स्थान पर यह आपको पाप के कीचड़ में पहुंचा देगा। पगड़ी अलग उतरेगी, कपड़े अलग खराब होंगे और उधर यदि समय पर नहीं पहुंचे तो कचहरी में मुकद्मा ख़ारिज हो जाएगा-

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पार ब्रह्म को पाइये, मन के ही प्रतीत।।

- ***साभार : बोध कथाएं***

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

वेदों में वर्णित जल-चिकित्सा

-डॉ. विजय कुमारी गुप्ता
, जालन्धर

वेद जल को सर्वश्रेष्ठ वैद्यमाता का नाम देता है।[9.] आंखों की दृष्टि वर्धक और नीरोग रखने का उत्तम साधन जल है।[10.] अथर्ववेद के मन्त्रों में हृदय की जलन, आंखों, एड़ियों व पंजों की जलन को शान्त करने, सद्योव्रण चिकित्सा रक्तस्राव होने आदि रोगों में जल का उपयोग बताया है।[11.] जल द्वारा दृ:स्वप्नों को दूर करने की बात भी कही गई है। जल को समस्त रोगों की औषधि बताते हुए जन्मजात रोगों से छुटकारा दिलाने वाला भी कहा गया है।[12.]

अपने मूल की ओर लौटना सृष्टि का शाश्वत् नियम है। चिकित्सा क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है। आजकल प्राकृतिक चिकित्सा (नेचुरोपैथी) सर्वोपरि प्रचलित है। प्राचीनकाल में रोगों से मुक्ति के रामबाण चिकित्सोपयोगी दो प्रकार की वस्तुओं का समावेश था- एक जल, वायु, अग्नि, सूर्य आदि और दूसरी औषधि, वनस्पति इत्यादि।

जल जहां स्वास्थ्य के लिए प्रकृति का सर्वश्रेष्ठ उपहार है वहीं चिकित्सा के साधन के रूप में जीवनदायी तत्त्वयुक्त होने के कारण सर्वोत्कृष्ट भी है। वेदों में जल के विभिन्न गुणों का उल्लेख किया गया है। सृष्टि के आदि से लेकर मृत्यु पर्यन्त जो उपयोगी होता है। वेदों की सृष्टि पृथिवी से पूर्व कही है। ''अप एव ससर्ज आदौ'' यह वैदिक वाक्य है। दार्शनिक क्षेत्र में भी जलतत्त्व के बाद ही पृथिवी-तत्त्व की उत्पत्ति दिखाई गई है।[1.] जल शान्ति देने वाला है।[2.] शरीर ही नहीं जब मन भी बेचैन हो जाता है तो जल पीने पर मनुष्य थोड़ा आश्वस्त हो जाता है। जल मीठा भी है।[3.] जल पवित्र होने के कारण पवित्रता करने वाला भी है।[4.]

वेद में जल की उत्पत्ति का भी वर्णन है। वहां मित्रा-वरुण को जल का देवता मानकर उनसे जल की उत्पत्ति वर्णित है।[5.] जल पहले वायु रूप था। मित्र और वरुण ये दो वायु हैं। ये जब अग्नि के समक्ष मिलते हैं तब जल को उत्पन्न करते हैं। ऋग्वेद में जल का चार प्रकार का वर्णन है।[6.]

1. आकाश से प्राप्त होने वाला जल।
2. झरनों से निकलने वाला जल।
3. कुएं और बावड़ियों से निकलने वाला जल।
4. जो स्वयं स्रोत से फूटकर बाहर निकलता है।।

सब प्रकार के जल निर्दोष माने जाते हैं। यजुर्वेद में भी जल के अनेक प्रकारों का वर्णन है। सामान्य: जल के औषधि तत्त्व का स्पष्ट उल्लेख सर्वत्र किया गया है।[7.] इतना ही नहीं जल से मन में स्थित पाप, द्रोहभाव, अपशब्द और मिथ्याचरण को बहा देने की प्रार्थना भी मिलती है।[8.] वेद जलों को सर्वश्रेष्ठ वैद्यमाता का नाम देता है।[9.] आंखों की दृष्टि वर्धक और नीरोग रखने का उत्तम साधन जल है।[10.]

अथर्ववेद के मन्त्रों में हृदय की जलन, आंखों, एड़ियों व पंजों की जलन को शान्त करने, सद्योव्रण चिकित्सा रक्तस्राव होने आदि रोगों में जल का उपयोग बताया है।[11.] जल द्वारा दृ:स्वप्नों को दूर करने की बात भी कही गई है। जल को समस्त रोगों की औषधि बताते हुए जन्मजात रोगों से छुटकारा दिलाने वाला भी कहा गया है।[12.] यजुर्वेद के मन्त्र में जल-चिकित्सा का रहस्य, मूल, गूढ, तत्त्व बताया गया है।[13.] जल पीने के बाद बल बढ़ाने वाला, सरलता की दिव्य प्रकृति को दूर करने वाला, मरण के भय को दूर करने वाला अर्थात् अपमृत्यु के भय को दूर करने वाला, दिव्य शक्ति से युक्त जल हमें स्वाद भी लगे। इसमें जल के चिकित्सात्मक गुण दिये गये हैं। उदक के सौ नाम निघण्टु के अध्याय 1.12 में दिये हैं। उनमें से कुछ नामों के विचार से जल चिकित्सा विषयक वैदिक दृष्टि का भी पता चलता है। वेद में वर्णित दृष्टि का भी पता चलता है। वेदमें वर्णित चिकित्सक अश्विनौ का भी सम्बन्ध जल से है। वे 'सिन्धुमातर:' कहे गये हैं।

मन्दिरों में स्नान, पूजा,आचमन आदि धार्मिक दृष्टि से जल की अनिवार्यता होने पर वहां तालाब आदि होते हैं। उनके अलावा कुछ मन्दिरों में ऐसा जल पाया जाता है,जिसका पान करने पर या स्नान करने पर रोग दूर हो जाते हैं। विदेशों में जल-चिकित्सा को Hydrotherapy के नाम से जाना जाता है। जर्मनी के महान् आचार्य सर लुईकूने ने जल के विभिन्न प्रयोगों द्वारा कई रोगों को सफलतापूर्वक दूर किया। प्राकृतिक चिकित्सा में जलोपचार की कई विधियां पायी जाती हैं। प्राय: बुखार के बढ़ने पर रोगी के सिर पर ठण्डे पानी की पट्टी, गर्म पानी की पट्टी इत्यादि रखकर बुखार की तेजी को कम करने का प्रचलन आज भी साधारण लोगों में है।

एलोपैथी में भी जल का अपना महत्त्व है। De-Hydration का इलाज जल से ही सम्भव है। दवाएं विभिन्न रासायनिक पदार्थों के रसों से बनाई जाती है। जल चिकित्सा के पीछे एक वैज्ञानिक तथ्य छिपा है। चिकित्सा में अनुभव ही उपचार का आधार है। चिकित्सा-विज्ञान दर्शनात्मक है। शरीर पंचभूतों से बना है। उसमें सक्रियता चेतन तत्त्व के कारण बनी हुई है। सप्तधातु जो शरीर में हैं। वे हैं-रस, रक्त, मांस, मद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।[14.] इनमें रस आधार तत्त्व है और वह पानी का गुण है। चरक मुनि के अनुसार 'शरीर में दो तत्त्व हैं। अग्नि और जल-शरीर की उष्णता, उमंग, चपलता स्थिर रखना आदि अग्नि का कर्म है और शान्ति, समाधान और पुष्टि का कार्य जल के अधीन है।[15.]

यह निर्विवाद सत्य है कि शारीरिक रोगों का आगमन बाहर से नहीं होता। अप्राकृतिक जीवन से शरीर में विकार पैदा होते हैं। तब प्रकृति उन्हें निकालने की चेष्टा करती है। शरीर का निर्माण ही ऐसा हुआ है कि वह अपने से भिन्न अप्राकृतिक विकारों को शरीर में पचा ही नहीं पाता। इसलिए रोग को दूर करने के लिए हमें उन्हीं तत्त्वों का सहारा लेना चाहिए जिनसे यह शरीर निर्मित हुआ है। तभी तो स्थायी रूप से तथा जड़ से रोग निकल जाने की सम्भावना रहती है। कितना महान् सत्य है और इसी का ऋषियों ने साक्षात्कार करके सूक्ष्म रूप में रोग निवारण में जल-चिकित्सा का संकेत दिया है। जल चिकित्सा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें रोग का नहीं, बल्कि रोग की जड़ का इलाज किया जाता है।

जल से जो आरोग्यवर्धक, रोगनिवारक तत्त्व 'रस' है। उसका उल्लेख भी संहिताओं में मिलता है। यजुर्वेद में जल को कल्याणकारी रस कहा गया है:-

यो व: शिवतमो रस:।[16.]
अपोअद्यान्वचारिषं रसेन समसूक्ष्म हि।[17.]

अत: कहा जा सकता है कि वेदों में स्थान-स्थान पर जल के गुणों का वर्णन किया गया है। जल को औषधि के रूप में सेवन कर अनेक रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। इसी को जल-चिकित्सा कहा गया है। जल के द्वारा हमें निरन्तर प्राण, जीवन, बल, आरोग्यता औषधि, रोग निवारक शक्ति एवं सुख प्राप्त होता है।

सन्दर्भ : 1. तैत्तिरीयोपनिषद् 2. ऋग्वेद 7.35, 3. यजुर्वेद-11/38, 4. ऋग्वेद 7/47/3 5.ऋग्वेद 7/64/1 6. अप्स्वन्तरमृतमासु भेजषम्। ऋग्वेद 1/5/23 8 ऋग्वेद 1/5/22 9. आपो अस्मान् मातर: शुन्धयन्तु...ऋग्वेद-10/17/10, 10. ऋग्वेद 1.5.23 , 11. अथर्ववेद-6/24/1, 2 6/57/2, 12. अथर्ववेद- 3/7/5, 13. यजुर्वेद-4/12, 14. सुश्रुत संहिता-14/6 15. चरक संहिता-26/25 16. यजुर्वेद-36/15, 17. यजुर्वेद-20/22।

- साभार : विश्वज्योति होशियारपुर (पंजाब)

आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी, दिल्ली-110007 के

नव निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह

दिनांक 15 मई 2016 (रविवार)

आपको विदित ही है कि आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी जिसे कुछ समय पूर्व एम.सी.डी. द्वारा तोड़ दिया गया था, जिसको पुन: स्थापित करने की मांग को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं विभिन्न आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से धरना-प्रदर्शन करने के बाद सरकार द्वारा आर्य समाज को पुन: स्थापित करने के लिए भूमि आवंटित करने के पश्चात् आर्य समाज भवन का पुनरुद्धार कर दिया गया है। नव निर्मित भवन का उद्घाटन 15 मई 2016 को होगा। इस अवसर पर यज्ञ सायं 4:30 बजे उद्घाटन समारोह सायं 5:30 बजे से किया जाएगा। सभी आर्यजनों/आर्य समाजों से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथि को आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी पहुंच कर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सभा द्वारा संचालित कक्षा: आर्यजन तत्काल पंजीकरण कराएं

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से प्रति शनिवार सायं 4:30 से 6 बजे
स्थान : आर्य समाज जनकपुरी सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री
सम्पर्क : शिव कुमार मदान (9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

महात्मा श्री सत्यानन्द जी मुंजाल : एक परिचय- एक प्रेरणा

महात्मा श्री सत्यानन्द जी मुंजाल
24 मई, 1917 - 14 अप्रैल, 2016

24 मई, 1917 को ग्राम कमालिया जिला लायलपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में श्री बहादुर चन्द मुंजाल जी के यहां जन्में श्री सत्यानन्द मुंजाल जी की प्राथमिक शिक्षा माता-पिता की इच्छानुसार कमालिया ग्राम के गुरुकुल में हुई।

माता पिता से प्राप्त वैदिक सिद्धान्त एवं आर्यसमाजी विचारधारा को गुरुकुलीय शिक्षा ने और अधिक संवारा और मजबूती प्रदान की। मैट्रिक एवं हाई स्कूल उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने क्वेटा डिफेंस वर्कशॉप में कार्य आरम्भ किया और

समय-समय पर क्वेटा आर्यसमाज एवं गुरुकुल पहुंचकर ज्ञान प्राप्त करते रहे। आपका विवाह श्रीमती पुष्पावती जी के साथ हुआ, जिन्होंने सहधर्मिनी के कर्त्तव्यों को पूर्णता से निभाया और उनका पूर्ण सहयोग किया। यज्ञ स्वाध्याय और आर्यसमाज के कार्यों में उनका अन्तिम समय तक सहयोग बना रहा।

वर्ष 1944 में आपने अमृतसर में दुकान खोली, किन्तु कुछ समय बाद वापस पाकिस्तान लौट गए। भारत विभाजन के बाद आप 1947 में लुधियाना आए तथा फिर दिल्ली आ गए। दिल्ली में आपने साइकिल का काम शुरु किया और आर्यसमाज पुलबंगस की स्थापना की। दिल्ली में फैक्ट्री लगाई तथा बहसदुरगढ़ में भी एक फैक्ट्री की स्थापना की। 1962 में आप वापस लुधियाना लौट गए और मॉडल टाउन को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

लुधियाना में आप आर्यमाज मॉडल टाउन के सदस्य और इसके मन्त्री एवं प्रधान भी रहे। आर्यसमाजी विचारधारा और सेवा कार्यों के चलते उन्होंने दिल्ली, पंजाब, उ. प्रदेश, हिमाचल आदि प्रदेशों की आर्यसमाजों का निरीक्षण किया। आपने टिहरी उत्तराखण्ड में बन्द बड़ी लगभग 30-40 आर्यसमाजों का पुनरुद्धार किया और उनकी गतिविधियों को पुन: आरम्भ कराया। आपने सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रदेशिक प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान पद को सुशोभित किया तथा अनेक संस्थाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। आप टंकारा ट्रस्ट के प्रधान रहे। सत्यार्थ प्रकाश न्यास (उदयपुर), परोपकारिणी सभा (अजमेर), वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (साबरकाठा), तपोवन आश्रम (देहरादून) के प्रमुख ट्रस्टी रहे।

आपने लुधियाना के आसपास के क्षेत्र में 20 के करीब नई आर्यसमाजों की स्थापना की। आप स्वयं आर्यसमाजों में यज्ञ से पूर्व दरियां तक बिछाते थे और हॉल की सफाई भी किया करते थे। आपके सात्विक जीवन की यह एक अहम मिसाल है। आपने कन्या गुरुकुल शास्त्री शास्त्री नगर के कुलपिता पद को सम्भाला। अब इस गुरुकुल का नाम महात्मा सत्यान्द मुंजाल आर्य कन्या गुरुकुल रखा गया है। आपके सेवा कार्यों तथा समाज सेवा के कारण अखिल भारतीय संन्यासी मंडल ने वर्ष 2000 में दयानन्द मठ में आयोजित कार्यक्रम में आपको 'महात्मा' नाम से अलंकृत किया। और आप महात्मा के नाम से प्रसिद्ध हुए और आर्य जगत आपको महात्मा सत्यान्दन मुंजाल जी के नाम से पुकारता है। आपने न केवल महात्मा नाम पाया अपितु अपने कार्यों से इसे चरितार्थ भी किया।

मुझे स्वयं उन्होंने एक बार बाताया कि वो काफी समय से बन्द पड़ी आर्यसमाज को खुलवाने के लिए गए और उसे साफ भी स्वयं किया। उस समय उनकी आयु 90 से अधिक रही होगी। आप स्वयं विचार करें कि आर्यसमाज उनकी नस-नस में कूट-कूट कर भरा था। मुझे उनका पहला आशीर्वाद 1991 के नवम्बर में उत्तरकाशी के भूकम्प के समय प्राप्त हुआ, जब वे पीड़ितों की सहायता के लिए वहां आए थे और आर्यसमाज के कैम्प में हमें कार्य करता देख अपना आशीर्वाद दिया था।

आपने अपने जीवन में महर्षि दयानन्द जी के शिक्षा मिशन को पूर्ण करने के लिए बहादुरचन्द मुंजाल आर्य स्कूल सहित सात आर्य विद्यालय एवं बी.एड. कॉलेज की स्थापना की, जो पूरे पंजाब में शिक्षा में एक अहम स्थान रखते हैं। इनके अतिरिक्त दयानन्द मैडिकल कॉलेज के अन्तर्गत हीरो हार्ट इंस्टीट्यूट भी उनके सेवा संस्थानों में विशेष स्थान रखता है।

आपने अपने जीवन में हजारों की संख्या में सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक विनय का वितरण किया।

वे अपने पीछे 5 सुपुत्रों सर्वश्री योगेश मुंजाल, सुरेश मुजाल, सुधीर मुंजाल, उमेश मुंजाल एवं श्री महेश मुंजाल तथा दो सुपुत्रियों श्रीमती सुशन चोपड़ा एवं श्रीमती नीलम थापर एवं पौत्र-पौत्रियों से भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। यह उन्हीं के दिए सस्कारों का प्रतिफल है कि उनके परिवार प्रत्येक घर में दैनिक यज्ञ होता है तथा स्थाई यज्ञशाला बनी हुई है। परमपिता से प्रार्थना है कि उनकी यज्ञीय भावना परिवार में सदैव बनी रहे और वे सदैव आर्यसमाज के माध्यम से समाज सेवा के कार्यों में सेवा रत रहें।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि

परोपकार एवं सेवा का जो पौधा महात्मा सत्यानन्द जी ने लगाया है वह आप सब परिवार के सदस्यों के सहयोग एवं सदभाव से वटवृक्ष के रूप में फैले और विश्व में उनके नाम का यश सदा फैलाते रहें।

- ***विनय आर्य***

रामनवमी के अवसर पर गायत्री यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज बी.एन.पूर्वी शालीमार बाग में रामनवमी का पावन पर्व 8 से 15 अप्रैल 2016 तक गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य प्रद्युम्न शास्त्री ने नवसंवत् तथा नवरात्र की वैदिक विवेचना की। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ भारत जी ने अपने उद्बोधन में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के आदर्शों के महत्वों पर प्रकाश डाला। डॉ. धर्मपाल आर्य जी ने महर्षि के मन्तव्यों पर आचरण की प्रेरणा दी तथा डॉ. महेश विद्यालंकार जी ने कुशल मंच संचालन करते हुए रामनवमी के पावन पर्व पर श्रीराम एवं श्री कृष्ण के आदर्श एवं मर्यादाओं को जीवन में अपनाकर जीवन को उन्नत करने की प्रेरणा दी और शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचंद्र देहलवी जी के जन्मदिवस पर आर्यसमाज के विकास में उनके योगदान की भूमिका पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पं.जगत वर्मा जी (पंजाब) सुमधुर संगीत प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं को भाव विभोर किया। कार्यक्रम के अंत में स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना डॉ. सुमन गुप्ता जी ने आभार प्रकट किया।- नरेन्द्र अरोड़ा, मन्त्री

प्रथम पृष्ठ का शेष

महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी .....

लुधियाना में उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया, जिसमें सभा ओर से महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री अजय सहगल जी ने पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

24 मई, 1917 को ग्राम कमालिया जिला लायलपुर (वर्तमान पाकिस्तान) में जन्में महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी को वैदिक सिद्धान्त एवं आर्यसमाजी विचारधारा पैतृक रूप से प्राप्त हुई थी जिसे उनकी गुरुकुलीय शिक्षा ने और अधिक संवारा और मजबूती प्रदान की। महात्मा सत्यानन्द जी ने उन्हीं संस्कारों एवं शिक्षाओं को अपने परिवार एवं अपनी सन्तानों के हृदय मे रोपित किया जिससे आज उनका परिवार वैदिक शिक्षा एवं आर्यसमाज की मान्यताओं से पूर्णत: ओत-प्रोत है और समय-समय पर आर्यसमाज के समस्त कार्यों व आयोजनों में सहयोगी बना रहता है। उन्होंने अपने जीवन में सामाजिक एवं धार्मिक सेवा कार्यों से न केवल महात्मा नाम पाया अपितु उसे अपने सेवा कार्यों से साकार भी किया। बहादुरचन्द मुंजाल आर्य स्कूल सहित 7 आर्य विद्यालय, हीरो हार्ट इंस्टीट्यूट, दयानन्द मैडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल उनके सेवा संस्थानों में विशेष स्थान रखते है। श्री मुंजाल जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा दिल्ली में 24 अप्रैल, 2016 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

नारी शोषण की कुप्रथा – हलाला!

मुस्लिम समुदाय में महिला यदि अपने लिए किसी अनहोनी से सबसे ज्यादा डरती है तो वो है तलाक क्योंकि मात्र तीन शब्द उसके हंसते-खेलते जीवन में अंधकार ला सकते हैं। ऐसा भी तो नहीं है कि चलो तलाक बोल दिया अगले दिन सॉरी कह दिया, या भूल सुधार कर ले और मामला टल जाये, नहीं! उसे उसी वक्त पति का घर छोड़ना पड़ेगा। सोचो वह महिला कहाँ जाएगी? पिछले दिनों अफजल प्रेमी गैंग के लोग उमर खालिद की अगुवाई में जेएनयू के कैम्पस में आजादी के नारे लगा रहे थे। कह रहे थे कश्मीर में लेंगे आजादी, बन्दूक से लेंगे आजादी, हम लड़कर लेंगे आजादी। इस प्रकार के देश विरोधी नारे लगने के बाद भी किसी कट्टरवादी उलेमा की ओर से निंदा आलोचना का कोई बयान नहीं सुनाई दिया। किन्तु अब जैसे ही तीन तलाक जैसी कुरीति से मुस्लिम महिलाओं की आजादी पर देश की सर्वोच्च अदालत में सुनवाई का मामला आया तो उलेमा और अल्पसंख्यक संगठन इसके समर्थन में उतर आये। तो मन में सवाल यह उठा कि मुस्लिम समाज की महिलाओं को आखिर तीन तलाक से कब मिलेगी आजादी? तीन तलाक पर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और सुप्रीम कोर्ट की तकरार के बाद मुस्लिम समाज एक अजीब घालमेल करता नजर आ रहा है।

जब सऊदी अरब और पाकिस्तान समेत कई मुस्लिम देशों में तीन तलाक पर पाबंदी लगा दी गई है तो भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में इस प्रथा को जारी रखने का क्या तुक है? बस इसलिए कि पुरुष को तो मनमानी का अधिकार है और महिलाओं को कोई अधिकार नहीं है। इनका जीवन और भविष्य उनकी जुबान से तीन बार निकलने वाले इस कड़वे शब्द पर ही निर्भर है? क्या महज तीन बार तलाक शब्द के उच्चारण के साथ ही जीवनभर का बंधन टूट जाता है? क्या इस्लाम में महिलाओं का दर्जा दोयम है? मुसलमानों के धर्मग्रंथ कुरान में किसी पुरुष को अपनी पत्नी से अरबी भाषा का शब्द ''तलाक'' तीन बार दोहराकर शादी जैसे जीवन भर के बंधन को तोड़ने का हक बताया गया है। तलाक के बारे में कुरान की आयत के आधार पर हदीसों में इस प्रकार लिखा है, इमाम अल बगवी ने कहा है, यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कहे कि मैंने तुझे दो तलाक दिए और तीसरा देना चाहता हूँ, तब भी तलाक वैध मानी जाएगी और विडम्बना देखिये सभी विद्वानों ने इसे जायज बताया है। हमारा उद्देश्य किसी समुदाय विशेष की आस्था क्रिया-कलापों पर चोट करना नहीं है। हमने पुराण से लेकर गीता तक की गलत व्याख्या पर हमेशा सवाल खड़े किये हैं और हम हमेशा मानवीय दृष्टिकोण अपनाने की पैरवी करते रहे हैं। सब जानते हैं अब परिस्थिति पहले के अनुरूप नहीं रही। इसलिए क्या अब हमें धार्मिक कानून से लेकर बहुत सारी कुरीतियों की पुन: समीक्षा की जरूरत नहीं है? भारत के मुसलमानों में पति फोन, एसएमएस संदेश यहां तक कि फेसबुक जैसे सोशल मीडिया साइटों तक पर पत्नियों को तलाक देते आए हैं। एक नई रिपोर्ट दिखाती है कि महिलाएं अब इस चलन के खिलाफ आवाज उठाकर उसमें बदलाव लाना चाहती हैं।

अभी पिछले दिनों एक न्यूज चैनल पर पाकिस्तानी मूल के कनाडाई लेखक विचारक तारेक फतेह साहब ने तलाक के बाद हलाला शब्द का जिक्र किया। मुझे यह सब बड़ा दिलचस्प लगने के साथ ही नारी के प्रति एक बड़ा क्रूर मजाक नजर आया। उन्होंने बताया कि अधिकतर मौलवी, मुल्ला तलाक जैसी प्रथा को क्यों खत्म नहीं चाहते! कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देकर बाद में पछताता है, क्योंकि औरतें गुलामों की तरह काम करती हैं और बच्चे भी पालती हैं। कुछ पढ़ी-लिखी औरतें पैसा कमा कर घर भी चलाती हैं। इसीलिए लोग फिर से अपनी औरत चाहते हैं तलाक शुदा औरत का हलाला करवाकर उसकी घर वापसी करा दी जाती है। हलाला इस तरह होता है, कि पहले तलाकशुदा महिला इद्दत का समय पूरा करे। फिर उसका कहीं और निकाह हो और उस शौहर के साथ उसके वैवाहिक रिश्ते बनें। इसके बाद वह शौहर अपनी मर्जी से उसे तलाक दे या उसका इंतकाल हो जाए। फिर बीवी इद्दत का समय पूरा करे। तब जाकर वह पहले शौहर से फिर निकाह कर सकती है। सबसे शर्मनाक यह है कि हलाला करवाने वाली औरत को किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध कायम करने का सबूत भी प्रस्तुत करना जरूरी होता है तो फिर ऐसे व्यक्ति को खोजना होता है, जो बाद में उसे तलाक भी दे दे, तभी वह औरत अपने पहले पति के पास जा सकती है। इसके लिए काजी मौलवी सबसे ज्यादा भरोसेमंद माने जाते हैं तारेक फतेह के अनुसार इस कारण भी कुछ मुस्लिम धर्मगुरु तीन तलाक जैसी कुरीतियों का पक्ष भी लेते नजर आते हैं।

इस सारे प्रसंग को सुनने के बाद यदि नारी के दृष्टिकोण से कोई प्रश्न करे तो क्या अल्लाह की नजर में औरतें पैदायशी अपराधी होती हैं? क्या कुरान में पति की जगह पत्नी को ही सजा देने का नियम है? यद्यपि तलाक देने के कई कारण और तरीके हो सकते हैं? लेकिन सजा सिर्फ औरत को ही क्यों मिलती है? कई बार इस प्रकार के तर्क या सुझाव रखने पर अक्सर कुछ लोग उल्टा हिन्दू धर्म में व्याप्त कुरीतियों को सामने रखकर इस प्रकार के सवालों से बचना चाहते हैं। हम मानते हैं एक नहीं बल्कि बहुत सारी कुरीतियाँ अभी भी जिन्दा हैं जिनको खत्म किये जाने की आज आवश्यकता है। अब हमें धार्मिक रूप से इन सवालों के जबाब तलाशने में समय नहीं गवाना चाहिए, बल्कि इन सवालों को कहो या सवाल खड़े करती इन कुरीतियों का ही अंत कर देना चाहिए हमें पुरुषवादी या धार्मिक कट्टरवादी विचारधारा का त्याग कर महिलाओं को वही स्वतंत्रता और सम्मान देना होगा जैसा वेदों में अंकित है कि नारी हमारे लिए पूजनीय है।

– *राजीव चौधरी*

डॉ. पूर्ण सिंह डबास राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित

दक्षिणी दिल्ली की प्रमुख समाज सेवी संस्था आर्य समाज साकेत के संस्थापक सदस्य एवं वर्तमान प्रधान डॉ. पूर्ण सिंह डबास जी को मानव संसाधन विकास मंत्रालय की हिन्दी सेवी सम्मान योजना के अंतर्गत 19 अप्रैल 16 को 'महापडित राहुल सांकृत्यायन' पुरस्कार से महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें शोध तथा पर्यटन साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। डॉ. डबास अनेक सामजिक, शैक्षिक तथा धार्मिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। वे तथा पिछले बीस वर्षो से उसके सर्वसम्मति से निवाचित प्रधान चले आ रहे हैं। डॉ. डबास को दिल्ली सरकार की हिन्दी अकादमी, इंद्रप्रस्थ साहित्य भारती(दिल्ली; ह्यूमन केयर चैरिटेबल ट्रस्ट, प्राचीन भारतीय विद्या सभा (उड़ीसा) तथा अर्थ सेवियर्स फाउंडेशन आदि अनेक संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। ज्ञात हो डा. डबास दिल्ली विश्वविद्यालय तथा पीकिंग विश्वविद्यालय (चीन) में प्रोफेसर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में ऋषिबोधोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में 1 मार्च 2016 को ऋषिबोधोत्सव डॉ. पूनम सूरी, अध्यक्ष आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति न. दिल्ली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम ऋग्वेद पारायण यज्ञ टंकारा उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व से शुरू हुआ। समारोह में विभिन्न कार्यक्रमों के अन्तर्गत ब्रह्मचारियों द्वारा भजन, कव्वाली, लघु नाटिका, भाषण आदि प्रस्तुत किये गये। युवा उत्सव के अन्तर्गत टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबॉल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। विशेष श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्र. आ. प्र.सभा, गुजरात) अध्यक्षता में किया गया जिसके मुख्य अतिथि केन्द्र सरकार के कृषि राज्यमंत्री श्री मोहन भाई कुण्डारिया उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. महेश वेदालंकार जी का प्रवचन हुआ। स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी श्रद्धानन्द (पलवल) को दिया गया। श्री दिनेश पथिक ने अपने भजनों के माध्यम से स्वामी दयानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्यसमाज भिडियाखेडी नेपाल का वार्षिकोत्सव सम्पन्न : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन नेपाल दी सूचना

आर्यसमाज भिडीयाखेडी १०अप्रैल को दोपहर में बहुत बड़ी शोभा यात्रा निकली गई। जिसका सकारात्मक प्रभाव पड़ा, और कार्यक्रम की जानकारी पूरे क्षेत्र को हो गई। गायिका जी ने गृहस्थ, परमेश्वर, यज्ञ, कन्या भ्रूण हत्या, सामाजिक उत्थान आदि सामयिक विषयों पर अपने अत्यंत मधुर कंठ से उपदेश देते हुये भजन गायन किया। वेदों के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवक्ता आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी जी ने चाणक्य नीति विदुर नीति, दर्शन उपनिषद आदि के प्रमाणों से उन बातों को पुष्ट करते हुए प्रवचन दिए।

अंतिम दिन १०१ यजमान दम्पतियों की विशाल संख्या कार्यक्रम में समुपस्थित हुई। प्रतिदिन रात्रि में जनता अपने काम काज से निवृत्त हो बड़ी संख्या में आती थी। यह हमारे आर्यसमाज के ३७ वर्षों में पहली बार हुआ कि सभी यज्ञ वेदियों में बैठने के स्थान पूरे भरे हुये थे। २०,२१,२२ अक्टूबर २०१६ को काठमांडू में होने जा रहे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व नेपाल आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य जी ने सभी को आमंत्रित किया इस विराट महोत्सव में श्री प्रभुशाह, योगेन्द्र मेहतो, बिरजा मेहतो, नागेन्द्र मेहतो, हरिंदर मेहतो, काशी मेहतो आदि आर्यजनों का विशेष सहयोग रहा।श्री नथुनी प्रसाद आर्य जी ने सभी विद्वानों व जनता जनार्दन व सहयोगियों का धन्यवाद किया।।

Glimpses of the Atharva Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Consolation to the Diseased Person

"Fear not, you willnot die. I make you able to reach old age. With my utterings I have drawn out all the wastes of your limbs."

Sublime thoughts along with correct and clear chanting of divine verses bring benefit to the sick person. Listening to the comforting words of the physician, the diseased person becomes mentally strong. One well-wishe physician recites a Vedic verse addressing the sick person:

"O the diseased person, forsake fear and doubt. You are safe under my treatment. My hearty thoughts are inspiring your heart with joy. Symptoms of your disease are vanishing by my consolatory words. You are gradually getting well. The vigour of life is manifesting in you. Your pain is slowly getting less and less." O sick man, address yourself like this : 'O disease, get far away from me. Do not be an obstacle in my path. I have been chosen to accomplish great tasks. I, therefore, need to have healthy and cheerful life. Run away soon from me.' The pleasing thoughts and the divine touch of the noble physician help in eradicating most of the apprehension of the diseased person.

मा बिभेर्न मरिष्यसि जरदष्टिं कृणोमि त्वा।
निरवोचमहं यक्ष्ममङ्गेभ्यो अंगज्वरं तव।।
(Av.v.30.8)

Ma biverna marisyasi Jara dastim krnomi tva.

niravocamaham yaksmamange bhyo angajvaram taba..

Cure by Touch and pass

Chapter IV, hymn 13 of the Atharva Veda prescribes psychic treatments by touch and pass. The expert physician is an ascetic with wisdom, selflessness and benevolence. Systematic touches and passes by fingers on different parts of the body with sympathetic words impart strength to the tissues and vigour to the mind of the diseased person. The last two verses read as follows:

"This left hand of mine is a disperser of disease and this right hand of mine is even more a disperser. This auspicious hand is verily a panacea, the all-healer and has got a benevolent touch."

"For the hands having ten branches, the tongue becomes forerunner of speech. With such healthy hands, that cure all ills, I touch your body all over to make you disease-free."

Other verses in the hymn express positive thoughts: 'O gracious bounties of Nature, may you restore him to life again', 'I have bestowed formidable strength for you by which the wasting disease will be driven away.'

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः।।
(Av.iv.13.6)

Ayam me hasto bhagabanayam me bhagabattarah.

ayam me visvabhesajo' yam sivabhimarsanah..

हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी।
अनामयित्नुभ्यां हस्ताभ्यां ताभ्यां त्वाभि मृशामसि।। *(Av.iv.13.7)*

Hastabhyam dasaskhabhyam jihva vacah purogavi.

anamayitnubhyam hastabhyam tabhyam tvabhi mrsamasi..

Worms and Fevers

Description of distressing worm and different forms of fever is given in chapter V, hymns 22 and 23.

Worm : 'The one that moves about in his two eyes, the one that moves into his nose and the one that goes to the midst of his teeth, that worm, we hereby wipe out.' The succeeding verse speaks of worms having various shapes and forms. The names of worms like Yavasa, Kaskasa, Ejatka, etc. require investigation.

Fever : 'Man you drive away all types of fever enlisted below : 1. tertian, 2. intermittent 3. constant 4. autumnal 5. pertaining to skin eruption 6. in cold 7. cold winter 8. in summer 9. during the rains.'

यो अक्ष्यौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति।
दतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जग्भया मसि।। *(Av.v.23.3)*

yo aksau parisarpati ya nase parisarpati. datam yo madhyam gachhati tam krimim jagbhayamasi..

गंधारिभ्यो मूजवद्भ्योऽङ्गेभ्यो मगधेभ्यः।
प्रैष्यन्जनमिव शेवधिं तक्मानं परि दद्मसि।
(Av.v.22.14)

Gandharibhyo mujabadbhyo angebhyo magadhebhyah.

praisyanjanamiva sevadhim takmanam pari dadmasi..

To be Continued.....

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय

को ई भी भाषा हो या कार्य उसे सीखने से पहले उससे जुड़े पहलुओं को जानना आवश्यक होता है। संस्कृत भाषा को सीखने के पहले आइये संस्कृत से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों को जानते हैं-

संस्कृत, संसार की सबसे पुरानी पुस्तक वेद की भाषा है. इसलिए इसे विश्व की प्रथम भाषा मानने में कहीं किसी संशय की संभावना नहीं है. इसे देववाणी अथवा सुरभारती भी कहा जाता है।

संस्कृत में हिन्दू धर्म से सम्बन्धित सभी धर्मग्रन्थ लिखे गये हैं। बौद्ध धर्म और जैन धर्म के भी कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ संस्कृत में लिखे गए हैं। आइए हमारी इस उन्नत भाषा के बारे में कुछ रोचक तथ्य जानते हैं:-

1. 1987 में अमरीका की फोर्ब्स पत्रिका के अनुसार संस्कृत कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अच्छी भाषा है. क्योंकि इसकी व्याकरण प्रोग्रामिंग भाषा से मिलती जुलती है।

2. जर्मन स्टेट यूनिवर्सिटी के अनुसार हिंदू कैलेंडर वर्तमान समय में इस्तेमाल किया जाने वाला सबसे अच्छा कैलेंडर है। क्योंकि इस कैंलेडर में नया साल सौर प्रणाली के भूवैज्ञानिक परिवर्तन के साथ शुरू होता है।

3. संस्कृत साहित्य का अधिकतर साहित्य पद्य में रचा गया है, जबकि अन्य भाषाओं का ज्यादातर साहित्य गद्य में पाया जाता है।

4. अमेरिकन हिंदू यूनिवर्सिटी के अनुसार संस्कृत में बात करने वाला मनुष्य बीपी, मधुमैह, कोलेस्ट्रॉल आदि रोग से मुक्त हो जाएगा। संस्कृत में बात करने से मानव शरीर का तंत्रिका तंत्र सक्रिय रहता है जिससे कि व्यक्ति का शरीर सकारात्मक आवेश के साथ सक्रिय हो जाता है।

5. नासा के पास 60,000 ताड़ के पत्तों की पाडुलिपियां हैं जिन पर वे अध्ययन कर रहे हैं। एक रिपोर्ट का कहना है कि रूसी जर्मन, जापानी और अमेरिकी सक्रिय रूप से हमारी पवित्र पुस्तकों से नई चीजों पर शोध कर रहे हैं और उन्हें वापस दुनिया के सामने अपने नाम से रख रहे हैं।

6. दुनिया के 17 देशों में एक या अधिक संस्कृत विश्वविद्यालय संस्कृत के बारे में अध्ययन और नई प्रौद्योगिकी प्राप्त करने के लिए हैं, पर संस्कृत को समर्पित उसके वास्तविक अध्ययन के लिए एक भी संस्कृत विश्वविद्यालय भारत में नहीं है।

7. दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी भाषा से प्रभावित हैं. हिन्दी, उर्दू कश्मीरी, उड़िया, बांग्ला, मराठी, सिन्धी और पंजाबी भाषा की उत्पति संस्कृत से ही हुई है।

8. नासा वैज्ञानिक द्वारा एक रिपोर्ट है कि अमेरिका 6वीं और 7वीं पीढ़ी के सुपर कंप्यूटर संस्कृत आधारित बना रहा है। जिससे सुपर कंप्यूटर अपनी अधिकतम सीमा तक उपयोग किया जा सके।

9. अमेरिका, रूस, स्वीडन, जर्मनी, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान और आस्ट्रेलिया वर्तमान में भरत नाट्यम और नटराज के महत्व के बारे में शोध कर रहे हैं। (नटराज शिव जी का कॉस्मिक नृत्य है। जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र कार्यालय के सामने शिव या नटराज की एक मूर्ति है।)

10. इंग्लैंड वर्तमान में हमारे श्री-चक्र पर आधारित एक रक्षा प्रणाली पर शोध कर रहा है।

11. विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द का एक या कुछ ही रूप होते हैं, जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 25 रूप होते हैं।

12. शोध से पाया गया है कि संस्कृत पढ़ने से स्मरण शक्ति (यादाशत) बढ़ती है।

13. संस्कृत वाक्यों में शब्दों की किसी भी क्रम में रखा जा सकता है। इससे अर्थ का अनर्थ होने की बहुत कम या कोई भी सम्भावना नहीं होती। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सभी शब्द विभक्ति और वचन के अनुसार होते हैं. जैसै- अहं गृहं गच्छामि या गच्छामि गृहं अहं दोनो ही ठीक हैं।

14. नासा के वैज्ञानिकों के अनुसार जब वे अंतरिक्ष ट्रैवलर्स को मैसेज भेजते थे तो उनके वाक्य उलट हो जाते थे। इस वजह से मैसेज का अर्थ ही बदल जाता था। उन्होंने कई भाषाओं का प्रयोग किया लेकिन हर बार यही समस्या आई। आखिर में उन्होंने संस्कृत में मैसेज भेजा क्योंकि संस्कृत के वाक्य उलटे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया है। ***क्रमशः***

- शोधछात्र, स्वामी श्रद्धानंद शोध संस्थान गुरुकुल कांगड़ी विवि हरिद्वार, मंत्री, आर्य समाज मानसरोवर पार्क शाहदरा, दिल्ली

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से प्रति रविवार सायं 5 से 7 बजे
स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली-110064
सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (9650183184)

प्रशिक्षण उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

प्रेरक प्रसंग

जान दे दी, परन्तु भेद न दिया

मुसलमानों ने ऋषि दयानन्द जी महाराज के विषय में कई आपत्तिजनक घटिया पुस्तकें लिखीं। पाकिस्तान बनाने के लिए अधिक उत्साह दिखाने वाले मिर्ज़ाइयों ने भी एक ऐसी पुस्तक लिखी। आर्यो ने इन सबका उत्तर देकर 'रंगीला रसूल' नाम की एक पुस्तक प्रकाशित की। इसके लेखक थे पण्डित चमूपति जी और प्रकाशक महाशय राजपाल जी। इस पर मुसलमान बड़े सटपटाये। न्यायालय में गये, परन्तु पुस्तक कानून के विरुद्ध सिद्ध न हुई। मुसलमानों ने महाशय राजपाल जी को छुरा मारा। वे वीरगति पाकर अमर हो गये। उनसे बारम्बार पूछा गया कि पुस्तक का लेखक कौन है? पुस्तक के ऊपर लेखक का नाम नहीं छपा था। उन्होंने जान दे दी परन्तु लेखक का नाम नहीं बताया। महाशय जी की इस वीरता पर पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने पंजाबी के प्रसिद्ध कवि वारसशाह का यह पद लिखा है-

वारसशाह न भेद-सन्दूक खुल्ले।
भावें जान दा जन्दरा टुट जावे।।

अर्थात् वारसशाह कहता है कि रहस्य का सन्दूक नहीं खुलना चाहिए, भले ही जीवन रूपी ताला टूट जावे।

ऐसे साहसी, सुधीर, वीर इतिहास बनाया करते हैं। ***साभार:***

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।**

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो आ सकती हैं। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 22 से 29 मई 2016

आर्य वीरांगना दल प्रदेश के तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली में 22 से 29 मई, 2016 तक लगाया जाएगा। आप समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने यहां आने वाली वीरांगनाओं को तथा अपने परिवार की बच्चियों को भाग लेने के लिए अवश्य भेजें। सम्पर्क करें- ***ब्र. सुमेधा आर्या*** ***श्रीमती शारदा आर्या,*** *संचालिका मो. 9971447372*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

35वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

19 मई, 2016 से 29 मई, 2016

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
22 मई प्रात: 10 बजे	29 मई प्रात: 10 बजे से

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक **महाशय धर्मपाल** प्रधान **धर्मपाल गुप्ता** व. उप प्रधानमहामन्त्री (9810040982) **जोगेन्द्र खट्टर** **योगेश आर्य** कोषाध्यक्ष

आर्य समाज प्रीत विहार में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली-92 में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 1 मई, से 10 मई तक आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क 500/- रुपये प्रति शिविरार्थी है। शिविर में पूरे 24 घंटे की दिनचर्या होगी। शिविर के उपरान्त सभी को प्रमाणपत्र प्रदान किए जाएंगे। अधिक जानकारी लिए मो. 9810756078 अथवा 011-22504698 पर सम्पर्क करें। - ***सुरेन्द्र रैली, प्रधान***

आर्य समाज बीकानेर का 142वां स्थापना समारोह

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर का 142वां स्थापना दिवस 8 अप्रैल को श्री उदयशंकर व्यास की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री शिव कुमार जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ से हुआ। सर्वश्री बलवन्त सिंह, गौतम सिंह, सुबोध बाला, नवलाराम, डॉ.धर्मप्रकाश, किशनरात आदि ने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

-महेश सोनी, मंत्री

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें-

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

प्रार्थना क्या होती है- प्रवचन

आर्य समाज डोरी वाला न्यू रोहतक रोड के साप्ताहिक सत्संग: मे आर्य विद्वान् श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी (पूर्व सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी) द्वारा बहुत ही सुन्दर एवं सरल भाषा में प्रार्थना क्या होती है इस विषय पर महषि दयानन्द जी द्वारा परिभाषित बातें रखी ।

प्रवेश सूचना

चन्द आर्य विद्या मन्दिर देसराज परिसर, सी-ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-65 में निम्न आर्य वर्ग की अनाथ व निराश्रित बालिकाओं का प्रवेश छठी से नवमीं कक्षा तक प्रारम्भ हो गया है। कार्यालय में आकर मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म प्राप्त करें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क व्यवस्था है। सम्पर्क करें- ***श्रीमती सुमन कपूर, 011-26316604***

युवाओं हेतु दिव्य जीवन निर्माण शिविर(आवासीय)

युवती वर्ग : 30 मई सायं से 3 जून 2016 प्रात: तक

युवक वर्ग : 9 जून सायं से 13 जून 2016 प्रात: तक

स्थान : वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी देहरादून

शिविर निदेशक : आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग

विषय : पूर्ण व्यक्तित्व विकास, स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंत्रण, सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान आत्म सुरक्षा के उपाय। वैदिक सार्वजनीय सत्सिद्धान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियो शो आदि।

नियम : शिविर में पूर्ण काल अनुशासित रहना होगा। प्रतिभागी की जिम्मेदारी माता-पिता अथवा प्रेरक की होगी एवं उनकी लिखित स्वीकृति भी जमा करनी होगी।

शिविर शुल्क : इस ईश्वरीय कार्य में प्रत्येक प्रतिभागी एवं अभिभावक द्वारा भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है। स्थान सीमित हैं। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें : ***ई, प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री मो. 09412051586***

प्रवेश सूचना

आर्य अनाथालय के वीरेश प्रताप परिसर, 1488 पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली-02 में कार्यरत रानी दत्ता आर्य विद्यालय व आर्य बाल गृह और आर्य कन्या सदन में निम्न आय वर्ग के अनाथ व निराश्रित बालक-बालिकाओं का प्रवेश कक्षा नर्सरी (4 साल 6 महीने) व कक्षा तीसरी (7 साल) तक प्रारम्भ है। मूल दस्तावेज दिखाकर प्रवेश फार्म लें। निवास, भोजन, शिक्षा आदि की नि:शुल्क व्यवस्था है। सम्पर्क करें- ***श्री राजकुमार सिंह, 011-23260428***

शोक समाचार

आर्य संन्यासी स्वामी जीवनानन्द ...

पूज्य स्वामी जीवनानन्द जी की स्मृति में श्रद्धांजलि यज्ञ उनके सुपुत्र श्री विजय भूषण आर्य जी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर मुख्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, स्वामी सच्चिदानंद जी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ प्रेमचन्द्र श्रीधर, श्री राणा गन्नौरी, राष्ट्रीय कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी, ब्र. सुमेधा जी, श्रीमती उषा किरण जी, श्री प्रकाश वीर बत्रा और स्वामी जी के ज्येष्ठ सुपुत्र श्री विश्व भूषण जी ने स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेने की प्रेरणा दी।

स्वामी जी जीवन भर आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। उन्होंने जहां अपना सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में लगा दिया वहीं अपने चारों पुत्रों को भी ऐसे संस्कार प्रदान किये कि वे आज आर्य समाज की विचारधारा को दूर-दूर तक फैला रहे हैं स्वामी जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री विश्व भूषण, श्री विजय भूषण और कनिष्ठ पुत्र श्री विवेक भूषण आर्य (स्वामी विवेकानन्द सरस्वती) समाज की विचार धारा को देश-विदेश तक फैला रहे हैं।

श्री सुरेन्द्र मोहन पाहवा को पत्नीशोक

गत दिनों आर्यसमाज के सदस्य श्री सुरेन्द्र मोहन पाहवा जी की धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी पाहवा जी का निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज प्रीत विहार दिल्ली में 19 अप्रैल, 2016 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित क्षेत्र की अनेक आर्यसमाज के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री बलदेव राज सोबती का निधन

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक के वरिष्ठ सदस्य, समाजसेवी श्री बलदेव राज सोबती जी का 22 अप्रैल, 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। वे लगभग 78 वर्ष के थे। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। उनकी इच्छानुसार उनका पार्थिव शरीर मानवता की सेवा के लिए दान कर दिया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 25 अप्रैल, 2016 को आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य सहित अन्य अनेक आर्यसमाजों एवं संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री रामफल बंसल को पत्नीशोक

सार्वदेशिक न्याय सभा के पूर्व प्रधान श्री रामफल बंसल जी की धर्मपत्नी श्रीमती मूर्ति देवी जी का 21 अप्रैल, 2016 को निधन हो गया। वे लगभग 84 वर्ष की थीं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा शाह ऑडिटोरियम, सिविल लाइन्स, दिल्ली में दिनांक 24 अप्रैल, 2016 को सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 25 अप्रैल से रविवार 1 मई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28/29 अप्रैल, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 अप्रैल, 2016

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

5 से 19 जून 2016

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, आर्य समाज पंजाबी बाग वैस्ट, दिल्ली-26

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्य आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्क: शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।

आवश्यक सामान : गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान।

नोट : शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

30 मई से 5 जून 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। जाने वाले शिविरार्थी 29 मई सायं 9 बजे आई.एस.बी.टी. कश्मीरीगेट दिल्ली से प्रस्थान करेंगे तथा 5 जून 2016 को सायं 3 बजे दिल्ली के लिए वापस रवाना होंगे। जो शिवरार्थी ट्रेन से जाना चाहें अपनी सुविधानुसार रेलवे आरक्षण स्वयं करवा लें। शिविर शुल्क प्रति शिवरार्थी 1100/- देय होगा। जिसमें आने-जाने का मार्ग व्यय (सामान्य बस द्वारा) सम्मिलित है। शिविर में जाने वाले शिविरार्थी अपना शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 में जमा करवा दें।

- सुखवीर सिंह आर्य, संयोजक,
मो. 09540012175, 09350502175

स्वास्थ्य चर्चा

बदलते मौसम में जब खांसी बने समस्या

आवंला, मुल्हेटी पिसी 10-10 ग्राम मीठा सोडा 5 ग्राम को मिलाकर दो रत्ती दवा मलाई में रखकर प्रात: सायं गर्म पानी से लें। सूखी खांसी में राम बाण है।

आवंला छोटी पीपल, सेंधा नमक 10-10 ग्राम कूट छान कर आधा ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार प्रयोग करें। ये गले की खराबी से उठने वाली खांसी में लाभदायक है।

2. आंखडे का बंद फूल और काली मिर्च 10-10 ग्राम पीसकर शहद में मिलाकर आधी काली मिर्च जैसी गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर एक-एक गोली प्रात: सायं गर्म पानी से लें।

3-4 हल्दी की गांठों को तोड़कर तवे पर भून कर पीस लें। फिर 3-3 ग्राम प्रात: सायं पानी से लें। सूखी-काली खांसी में लाभकारी है।

काली मिर्च 5 ग्राम पिपली 10 ग्राम अनार दाना 20 ग्राम को पीसकर गुड़ मिलाकर चने बराबर गोलियां बना छाया में सुखा कर एक-एक गोली दिन में दो तीन बार चूसें। खांसी दूर होगी।

फिटकरी 10 ग्राम को दरदरा कूट तवे पर भूने, भूनते समय केले के पेड़ का गूदा का पानी 100 ग्राम थोड़ा-थोड़ा कर डालते जायें। फिर उतार कर ठंडा कर पीस लें। एक वर्ष के बच्चे को एक चौथाई रत्ती दो साल के बच्चे को आधा रत्ती तीन साल के बच्चे को एक रत्ती शहद में मिलाकर प्रात: सायं चटाएं। खांसी दूर होगी।

आवंला, मुल्हेटी 25-25 ग्राम कूट पीस कर 5-5 ग्राम प्रात: सायं गर्म पानी से लें। इससे जमा कफ निकल जाता है। *साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'*

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह